



आधुनिक ग्रंथालय सेवाएं

14.1 परिचय

इंटरनेट 1950 के दशक में अस्तित्व में आया तथा केवल 1990 के दशक में ही इसने लोकप्रियता हासिल की। इसने जीवन के हर क्षेत्र चाहे बैंकिंग, मनोरंजन या शिक्षा हो, में पूरी तरह से एक क्रांति ला दी है। इसी तरह, ग्रंथालयों पर इनका आश्चर्यजनक प्रभाव हुआ है। ग्रंथालयों जिन्हें ज्ञान केंद्र के रूप में जाना जाता हैं, ने अपने पाठकों को नए संग्रह एवं सेवाएं प्रदान करने में इंटरनेट से लाभ लिया है। इस पाठ में, आप आधुनिक ग्रंथालय सेवाओं, उनकी विशेषताओं एवं पाठकों के लिए इनके महत्त्व, के बारे में अध्ययन करेंगे।



14.2 उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप सक्षम होंगे:

- समाज के लिए आधुनिक ग्रंथालयों के महत्त्व की व्याख्या करने;
- इंटरनेट ने ग्रंथालय कार्यों के तरीकों को कैसे परिवर्तित किया है, का वर्णन करने;
- नए उपकरणों एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग से ग्रंथालयों द्वारा प्रदत्त सेवाओं की परिगणना करने;
- ग्रंथालयों द्वारा प्रदत्त मैनुअल एवं कम्प्यूटरीकृत सेवाओं के बीच अंतर करने; और
- विभिन्न ऑनलाइन संसाधनों को सूचीबद्ध करने में।

14.3 आधुनिक ग्रंथालय

आधुनिक ग्रंथालय एक सामाजिक संगठन है जो प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके सूचना सेवाएं प्रदान करता है। यह जरूरत पड़ने पर सेवाओं को 24 X 7 के आधार पर सभी प्रकार की जनता के लिए सेवा प्रदान करती है। यह “स्थान आधारित सेवाएं” प्रदान करने तक ही सीमित नहीं है।

आधुनिक ग्रंथालयों की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:



आधुनिक ग्रंथालय ज्ञान को सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराने में एक प्रकार से सामाजिक कार्य करते हैं। वे दो निर्णायक भूमिकाएं निभाते हैं। सबसे पहले, सूचना एवं ज्ञान के स्थानीय केन्द्र के रूप में सेवा करना और दूसरा, राष्ट्रीय एवं वैश्विक ज्ञान का एक स्थानीय द्वार (गेटवे) होना। व्यापक प्रचलित पुस्तकों से उनके मस्तिष्क को आग की तरह सुलगा कर, बच्चों के ज्ञान की दुनिया के गेटवे के रूप में भी सेवा करते हैं। वे कम उम्र के बच्चों में पढ़ने की आदतों को विकसित करते हैं।

आधुनिक ग्रंथालय के कार्य :

- अधिकतम मात्रा में वर्तमान और गुणवत्तापरक संभाव्य सूचना संसाधनों का चयन, संग्रह, उन्हें संगठित करके अपने विविधापूर्ण विषम पाठक आबादी के पाठकों को, जब भी इनकी जरूरत होती है, वितरित करना।
- जैसे कभी-कभी इनके पास पाठकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के अपर्याप्त सूचना संसाधन होने के कारण यह अपने पाठकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय नेटवर्क के सदस्य बनते हैं।
- अभिगम युक्त वेबसाइट का रख-रखाव करना तथा अपनी सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी पर निर्भर होना।
- स्थान-आधारित सेवाएं प्रदान करने के अतिरिक्त, जब भी और जहां पर भी पाठकों को आवश्यकता हो, सेवाएं प्रदान करने के लिए ठोस प्रयास करना।
- नियमित आधार पर संदर्भ तथा पाठक शिक्षा प्रदान करना। ये अपने पाठकों के लिए सूचना साक्षरता कार्यक्रमों का भी आयोजन करते हैं।
- संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए उनको आकर्षित करना तथा अपने संसाधनों के बारे में बताने के लिए, नियमित आधार पर पाठकों के साथ संवाद एवं उनसे जुड़ना।
- छात्रों एवं शोध छात्रों को आवधिक पेपर, शोध गतिविधियों, नौकरी खोज आदि के लिए आवश्यक, इंटरनेट अभिगम, हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड, वाई-फाई की सुविधा निःशुल्क प्रदान करना।
- छात्रों एवं पाठकों को प्रदर्शनियों तथा समुदाय बैठकों के आयोजन के लिए स्थान उपलब्ध कराना है। यह समूह चर्चा के लिए “शांत स्थल” और स्थान प्रदान करते हैं।
- शारीरिक विकलांग पाठकों के लिए अभिगम्य एवं मैत्रीपूर्ण है। इसमें एक सहायक प्रौद्योगिकी केंद्र होता है, जो दृष्टिहीन पाठकों को कंप्यूटर तथा इंटरनेट संसाधनों के अभिगम में सक्षम बनाता है। यह पाठकों को मुद्रण विकलांगता में सहायता करने के लिए सूचना संसाधनों को वैकल्पिक प्रारूपों में भी प्रदान करते हैं।
- अपने पाठकों की प्रतिक्रिया के आधार पर, लगातार अपने संग्रह एवं सेवाओं का



टिप्पणी

मूल्यांकन करते हैं और पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रिया के आलोक में, उनका विकास एवं सुधार करते हैं।



पाठगत प्रश्न 14.1

1. एक आधुनिक ग्रंथालय क्या है?

14.4 आधुनिक ग्रंथालय सेवाओं की आवश्यकता

प्रारम्भ में ग्रंथालय 'स्थान-आधारित' सेवा संस्थाएं थी जो अपने पाठकों की सूचना आवश्यकतों की पूर्ति के लिए अस्तित्व में थी।

पाठक अपनी आवश्यकतानुसार सूचना के विभिन्न स्रोतों से परामर्श के लिए ग्रंथालयों में आते थे। पिछले तीन दशकों के दौरान, इंटरनेट प्रौद्योगिकी के उद्भव, आधुनिक दूरसंचार एवं संबंधित क्षेत्रों जैसे, डाटा प्रोसेसिंग, सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इत्यादि ने ग्रंथालयों के मौलिक कामकाज एवं वातावरण को प्रभावित किया है। अपने अस्तित्व के लिए ग्रंथालय लगातार स्वयं को बदल रहे हैं। नये तरीके ढूंढ रहे हैं। उनके पास परिवर्तन, विकास और चयन करने की अतिरिक्त सुविधा नहीं है, परन्तु उन्होंने ज्ञान और शिक्षा के केंद्र के रूप में स्वयं को जीवित रखने के लिए प्रमुख स्थान बनाया है। इस सामाजिक घटना के पीछे कई कारण हैं। प्रौद्योगिकी ने हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है।

पाठकों की सूचना-मांग व्यवहार में बदलाव आया है। ग्रंथालय को पाठकों की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वयं में बदलाव लाने पड़ते हैं। ग्रंथालय को पाठकों को किसी भी प्रारूप में, जब भी जहां भी उनको इसकी जरूरत होती है, सूचना प्रदान करनी पड़ती है। नई पीढ़ी जिसे 'मिलेनियल या नेटिजन' के रूप में जाना जाता है, ऑनलाइन वातावरण में आसानी से काम कर रही है।

पाठकों की उम्मीदों तथा मांगों में कई गुणा वृद्धि हुई है। वे, जगह आधारित ग्रंथालय सेवाओं से सन्तुष्ट नहीं हैं, क्योंकि वे भौतिक ग्रंथालय की चार दीवारों से परे सूचना सेवाएं चाहते हैं।

ग्रंथालयों के लिए यह सुझाव है, कि वे अपनी पाठक आबादी की उम्मीदों एवं मांगों के अनुसार बदलें। ग्रंथालय अपने मौजूदा पाठकों को बनाए रखने तथा नए लोगों को आकर्षित करने के लिए नवीन सूचना सेवाएं प्रदान करने के लिए, नई तकनीकों को लागू कर सकते हैं। यदि ग्रंथालय पाठकों की मांगों और उम्मीदों के अनुसार नई आधुनिक सेवाएं प्रदान करने के लिए नहीं बदलते हैं, तो उनको विलुप्त होने का खतरा है। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि आधुनिक ग्रंथालय सेवाएं, निम्नलिखित कारणों से जरूरी हैं:

- पाठकों के सूचना मांग व्यवहार में बदलाव
- पाठकों की मांगों और अपेक्षाओं में वृद्धि
- प्रौद्योगिकी की उपलब्धता, जो उपलब्धता एवं अभिगम्यता को आसान बनाती है।



टिप्पणी

14.5 मानवचालित एवं कंप्यूटरीकृत सेवाएं

ग्रंथालयों में सेवाएं प्रदान करने के विभिन्न तरीके हैं, जिनको मोटे तौर पर दो वर्गों मानवचालित (मैनुअल) एवं कंप्यूटरीकृत सेवाओं में बांटा जा सकता है। इनकी चर्चा आगे की गई है।

14.5.1 मानवचालित सेवाएं

विभिन्न ग्रंथालय अभिलेखन, पंजिका एवं पत्रक का रख-रखाव करना, मानवचालित प्रणाली के रूप में जाना जाता है। बिना किसी कंप्यूटर हस्तक्षेप के यह विभिन्न गतिविधियों और हस्त प्रतिक्रियाओं के निष्पादन पर जोर देता है। कई ऐसे ग्रंथालय हैं जो गृह-व्यवस्था और नियमित संचालन के काम, जो दोहराव प्रकृति के होते हैं, को मैनुअल रूप से करते हैं। जो सेवाएं, कंप्यूटर को मध्यस्थ के रूप में उपयोग किए बिना पाठकों को प्रदान कराई जाती हैं, मानवचालित (मैनुअल) सेवाओं के रूप में जानी जाती हैं। जबकि कंप्यूटरीकृत सेवाएं, कंप्यूटर को उपकरणों या मध्यस्थता के रूप में प्रयोग करके प्रदान की जाती हैं।

14.5.2 कंप्यूटरीकृत सेवाएं

आजकल ग्रंथालय सभी गतिविधियों एवं प्रक्रियाओं के अभिलेखों को बनाए रखने के लिए कंप्यूटरीकृत प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं। ग्रंथालयों ने अपना गृह-व्यवस्था संचालन, जैसे अधिग्रहण, प्रसूचीकरण, देय-आदेय तथा पत्रिका देय शुल्क विवरणों का रिकार्ड को कंप्यूटरीकृत किया है। ग्रंथालय, ग्रंथालयों की विभिन्न गतिविधियों को करने के लिए ग्रंथालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर (एलएमएस) का उपयोग करते हैं। सॉफ्टवेयर में ग्रंथालय गतिविधियों के विभिन्न मॉड्यूल हैं। सॉफ्टवेयर प्रयोग से ग्रंथालयों के नियमित कार्यों को तेजी और कुशलता से किया जाता है। सरल शब्दों में, कंप्यूटरीकृत प्रणाली में, सभी प्रकार के रख-रखाव का संचालन कंप्यूटरों के प्रयोग से किया जाता है। कंप्यूटरीकृत सेवाएं भी एल.एम.एस. के माध्यम से पाठकों को प्रदान की जाती हैं।

उदाहरण के लिए मैनुअल रूप में देय-आदेय विभाग पत्रक प्रणाली या रजिस्टर प्रणाली के प्रयोग से पाठकों को पुस्तकें निर्गमित करते हैं। कंप्यूटरीकृत देय-आदेय प्रणाली में, ग्रंथालय को पाठकों के कार्ड या टिकट निर्गम करने और बनाए रखने की आवश्यकता नहीं होती। प्रत्येक सदस्य को सदस्य डाटाबेस अभिगम के लिए, सॉफ्टवेयर द्वारा प्रयोग की जाने वाली विशिष्ट पहचान संख्या (जैसे ग्रंथालय सदस्यता संख्या के रूप में) के साथ एक कार्ड की आवश्यकता होती है। सॉफ्टवेयर से कई निर्गम सुविधाओं को भी नियंत्रित किया जाता है।

14.5.3 मानवचालित बनाम कंप्यूटरीकृत सेवाएं

मानवचालित (मैनुअल) और कंप्यूटरीकृत सेवाओं की तुलना इस प्रकार से की जा सकती है:

मॉड्यूल-4

ग्रंथालय और सूचना सेवाएं



टिप्पणी

आधुनिक ग्रंथालय सेवाएं

मानवचालित (मैनुअल) सेवाएँ	कंप्यूटरीकृत सेवाएं
परिचालन विभाग द्वारा पाठकों को कार्ड या रजिस्ट्रों का प्रयोग करके पुस्तक दी जाती है।	प्रत्येक सदस्य को सदस्य डाटाबेस तक पहुँचने के लिए साफ्टवेयर द्वारा प्रयोग की जाने वाली विशिष्ट पहचान संख्या (जैसे ग्रंथालय सदस्यता संख्या) सहित एक कार्ड की आवश्यकता होती है। इस साफ्टवेयर के द्वारा एकाधिक बार आदेय सुविधाओं को भी नियंत्रित किया जाता है।
ग्रंथालय का तकनीकी विभाग पुस्तकों का प्रसूचीकरण करता है तथा मुद्रित या पत्रक प्रसूची तैयार करता है। यह नई अतिरिक्त सूचियों को भी मैनुअल रूप से तैयार करता है।	ग्रंथालय संसाधनों को खोजने एवं प्राप्ति के लिए पाठकों को ओपेक (OPAC) प्रदान किया जाता है।
ग्रंथालय पाठकों की शोध आवश्यकताओं के अनुसार ग्रंथ सूचियां, सार एवं अनुक्रमणी तैयार करते हैं।	व्यावसायिक प्रकाशकों के माध्यम से पाठकों को अनुक्रमणिका एवं सारकरण सेवाओं का ऑनलाइन अभिगम प्रदान किया जाता है।
पत्रिकाओं की विषय-वस्तु की तालिका की प्रतिलिपियों के परिचालन द्वारा पाठकों को समसामयिक जागरूकता सेवा (सीएएस) प्रदान की जाती है।	पाठकों को मेल अलर्ट के द्वारा नई पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के संस्करण के आगमन के बारे में सूचित किया जाता है। पाठकों को यह भी समझाया जाता है कि टीओसी (विषय वस्तु सारणी) अलर्ट पर साईन करने से प्रकाशकों से आरआरएस (RSS) या ई7मेल अलर्ट को कैसे प्राप्त किया जाता है। पाठकों को अक्सर एक नई पत्रिका के प्रकाशन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रकाशकों की वेबसाइट पर पंजीकरण करना होता है। पंजीकरण हमेशा निशुल्क होता है।
आमने-सामने साक्षात्कार के द्वारा संदर्भ सेवा प्रदान की जाती है।	संदर्भ सेवा ई-मेल, चैट, त्वरित संदेश, इत्यादि के द्वारा प्रदान की जाती है।
चोरी, नुकसान और तोड़-फोड़ को नियंत्रित करने के लिए ग्रंथालय स्टाफ इनकी मॉनीटरिंग पर्यवेक्षण करता है और सुरक्षा को बनाए रखता है।	अनुशासन और सुरक्षा बनाए रखने के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए जाते हैं।
शैल्फ-सूची की स्टैक में व्यवस्थित पुस्तकों से तुलना करके, स्टॉक टेकिंग की जाती है।	स्टॉक सत्यापन के लिए आरएफआईडी (RFID) का प्रयोग किया जाता है।



पाठगत प्रश्न 14.2

1. मानवचलित (मैनुअल) और कंप्यूटरीकृत सेवाओं को देय-आदेय सेवाओं एवं स्टॉक सत्यापन उद्देश्यों के संदर्भ में अंतर स्पष्ट कीजिए?

14.6 आधुनिक ग्रंथालय सेवाएं

14.6.1 ई-संसाधनों का अभिगम

पहले, ग्रंथालय, विभिन्न मुद्रित संसाधनों, जैसे पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार पत्र, मैगजीनों को अर्जित, संसाधित, संगठित और वितरित करते थे। अब वे इन्हें उनके ई-स्वरूपों जैसे ई-पत्रिकाएं, ई-पुस्तकें, ई-लघु व वृहद् शोध एवं आनलाईन डाटाबेसों को सक्रिय रूप से अर्जित करते हैं। ग्रंथालय ई-संसाधनों का शुल्क देकर ग्राहक बनते हैं और इंटरनेट के माध्यम से इन संसाधनों का अभिगम प्रदान करते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को ऑनलाइन संसाधनों के रूप में भी जाना जाता है। इसमें “बॉन डिजिटल” सम्मिलित है जिन्हें प्रत्यक्ष ऑनलाइन उत्पादित किया जाता है और प्रिंट संसाधनों जिन्हें (स्कैन) क्रमवीक्षण करके डिजिटल किया जाता है। ‘डाटाबेस’ शब्द से अभिप्राय अभिलेखों के एक संग्रह से है जिनमें सांख्यिक, शाब्दिक या चित्र आधारित डाटा हो सकता है। आमतौर पर डाटाबेस एक खोज-युक्त स्वरूप में होता है। इसका मतलब है कि यह खोज करने और उनकी आवश्यक सूचना की पुनः प्राप्ति में पाठकों की मदद में एक खोज सुविधा या उपकरण है। ग्रंथालय प्रसूची, ओपेक (OPAC) पूर्ण पाठ एवं ग्रंथात्मक डाटाबेस सभी डाटाबेसों के उदाहरण हैं।

जैसाकि इन संसाधनों को इंटरनेट के माध्यम से अभिगम किया जाता है, उनको ऑनलाइन संसाधनों के रूप में भी जाना जाता है। इंटरनेट के आगमन से पहले, ये डाटाबेस, ऑनलाइन डाटाबेस मुद्रित स्रोतों के रूप में या CD-Rom पर उपलब्ध थे। डाटाबेसों के उदाहरण, नीचे दिए गए हैं:

- एलिसवियर (Elsevier) द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएं एक डाटाबेस के माध्यम से ऑनलाईन उपलब्ध है जो साइंस डाइरेक्ट (Science Direct) के रूप में लोकप्रिय माना जाता है।
- स्प्रिंगर (Springer) द्वारा प्रकाशित पुस्तकें, पुस्तक श्रृंखला, पत्रिकाओं तक ऑनलाइन अभिगम संभव है जिसे स्प्रिंगर लिंक (Springer Link) के रूप में जाना जाता है।

ग्रंथात्मक डाटाबेस प्रकाशित सूचना के बारे में संदर्भ प्रदान करते हैं, जैसे जे-गेट, स्कोप्स, इत्यादि। ये डाटाबेस पत्रिका लेखों के सार प्रदान करते हैं। पाठक सार पढ़ सकते हैं तथा अपनी शोध आवश्यकताओं के लिए लेखों की प्रासंगिकता का सूचनाप्रद मूल्यांकन कर सकते हैं।

14.6.2 संसाधन सहभागिता

संसाधन सहभागिता का मतलब है दो या अधिक ग्रंथालयों द्वारा एक दूसरे के संसाधनों का सामूहिक उपयोग करना। यह ग्रंथालयों द्वारा सूचना संसाधनों एवं सेवाओं जो सीमित या विशिष्ट ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान



टिप्पणी



टिप्पणी

हो सकती हैं तथा ग्रंथालयों में भी उपलब्ध नहीं होती हैं, की सहभागिता का एक प्रयास है। कोई भी ग्रंथालय विभिन्न कारणों से, जैसे सूचना की बहुतायतता प्रलेखों की बहुलता, जगह की कमी, स्टाफ की कमी के कारण आत्मनिर्भर नहीं हो सकते। वे ऑनलाइन संसाधनों जैसे डाटाबेस, ऑनलाइन पत्रिकाएं एवं पुस्तकें, लघु एवं वृहद शोध की सहभागिता के लिए सहकारी संघ (कन्सोर्टिया) एवं नेटवर्क का गठन करते हैं। ग्रंथालय संसाधनों एवं सेवाओं के अर्जन एवं सहभागिता के लिए एक संघ या नेटवर्क या सहकारी संगठनों का गठन करता है। इन संगठनों या नेटवर्क को आमतौर पर सहकारी संगठन (कन्सोर्टिया) के रूप में जाना जाता है।

कुछ कन्सोर्टिया के उदाहरण हैं:

इन्डेस्ट (INDEST) (Indian National Digital Library in Engineering Sciences and Technology) <http://paniit.iitd.ac.in/indest/>

Indian National Digital Library in Engineering Sciences and Technology को 2003 में मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा स्थापित किया गया था। इसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- संघ के सदस्यों के लिए अत्यधिक रियायती दरों पर ई-संसाधनों का अंशदान/ग्राहक बनाना (सब्सकाइब) करना।
- अन्य इंजीनियरिंग तथा तकनीकी संस्थाओं का भी अंशदान सहभागिता आधारित प्रमुख सदस्यों के अतिरिक्त लाभ का विस्तार उपलब्ध कराना।
- सदस्य ग्रंथालयों एवं अन्य सहकारी संघों के बीच सहयोग और परस्पर आदान-प्रदान के और अधिक रास्ते खोजना।

यूजीसी-इन्फोनेट डिजिटल लाइब्रेरी कंसोर्टियम <http://www.inflibnet.ac.in/econ/>

यूजीसी इन्फोनेट कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालयों के लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रदान करने के बाद, देश के शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों के बीच इलैक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा 2003 में यूजीसी इन्फोनेट डिजिटल लाइब्रेरी कंसोर्टियम स्थापित किया गया था। कंसोर्टियम के उद्देश्य इस प्रकार हैं :

- बड़ी संख्या में विश्वविद्यालयों एवं कालेजों को विद्वतायुक्त इलैक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं, पूर्णपाठ्य एवं ग्रंथात्मक पाठकों तक अभिगम प्रदान करना;
- विद्वता-युक्त विषय वस्तु के शीघ्र और कुशल अभिगम को बढ़ावा देना;
- देश की शिक्षण ओर शिक्षा की गतिविधियों में आई सी टी को उपयोग को प्रवृत्त और प्रोन्नत करना;
- अपने सहभागी सदस्यों के लिए कन्सोर्टिया के लाभ का विस्तार करना;
- विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पाठकों, ग्रंथालयाध्यक्षों, शोधकर्ताओं एवं सकाय



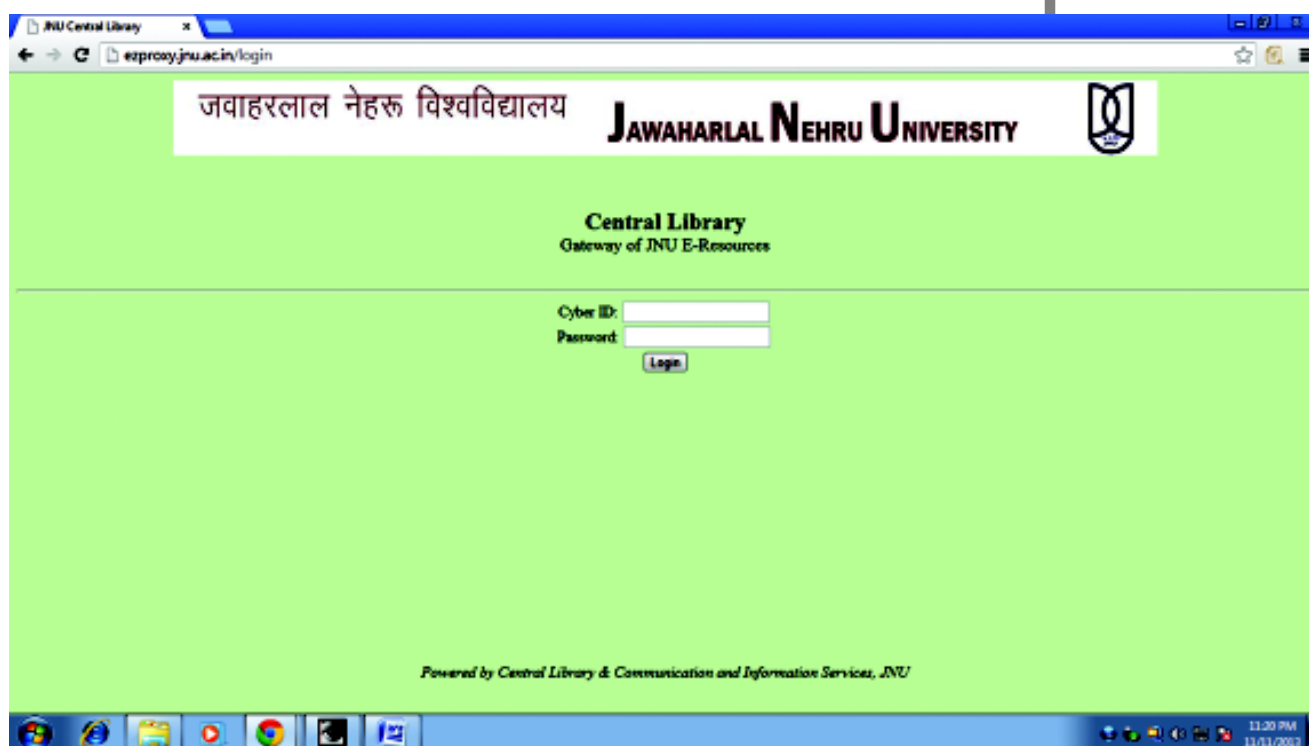
टिप्पणी

सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान करना। कई ग्रंथालय अपने पाठकों को कंप्यूटरीकृत अभिगम के साथ-साथ पूर्ण पाठ्य पत्रिकाओं का उपयोग उपलब्ध कराने के लिए ई-जर्नल कन्सोर्टियम से जुड़ गए हैं। अब ग्रंथालय पूर्ण-पाठ्य-पत्रिकाओं और पत्रिकाओं में लेखों के लिंक देते हैं। इस सुविधा के साथ पाठक अपने निजी कंप्यूटर पर पूर्ण-पाठ्य पत्रिकाओं का अभिगम, लेख का क्रमवीक्षण कर सकते हैं और यदि उपयोगी हो, तो अपने डेस्कटाप पर इसका प्रिंट प्राप्त कर सकते हैं।

14.6.3 परोक्ष अभिगम

ग्रंथालय अपने पाठकों को संसाधनों के परोक्ष अभिगम के लिए “सिंगल साइन ऑन” सुविधा प्रदान करते हैं। इसमें सदस्यों को एकल यू.एन/पी डब्ल्यू दिया जाता है जिससे वे ग्रंथालय में आए बिना, ग्रंथालय के सारे संसाधनों तक अभिगम कर सकते हैं।

उदाहरणार्थ, ग्रंथालय ओसीएलसी द्वारा उपलब्ध कराए गए एक प्रमाणीकरण और उपयोगी सॉफ्टवेयर ई जेड प्रॉक्सी का प्रयोग करते हैं। यह पाठकों को ग्रंथालय का लाईसेंस-प्राप्त सामग्री के लिए परोक्ष अभिगम प्राप्त करने में मदद करते हैं। ई-संसाधनों का परोक्ष अभिगम प्रदान कराने वाले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के केंद्रीय ग्रंथालय का एक स्क्रीन शॉट नीचे दिखाया गया है:—



चित्र 14.1 : जे एन यू लाइब्रेरी के ई संसाधनों के गेटवे का इनेपशॉट



टिप्पणी



पाठगत प्रश्न 14.3

1. ग्रंथालय कन्सोर्टियम, संसाधनों की सहभागिता को कैसे बढ़ावा देते हैं, सोदाहरण वर्णन करें?
2. परोक्ष अभिगम से आप क्या समझते हैं?

14.6.4 संघ प्रसूचियाँ और वेब ओपेक

संघ प्रसूची एक संयुक्त ग्रंथालय प्रसूची होती है, जिसमें अनेक ग्रंथालयों के संग्रह का वर्णन होता है। प्रलेख विवरण एवं अंतः ग्रंथालय ऋण के लिए अन्य ग्रंथालयों से सामग्री का पता लगाने और अनुरोध पर सहायता करने के रूप में संघ प्रसूची और वेब ओपेक, ग्रंथालयों के लिए उपयोगी होते हैं।

14.6.5 डिजिटल संदर्भ सेवाएं

डिजिटल संदर्भ सेवा, ई-संदर्भ सेवा होती है जहां पाठक निजी तौर पर उपस्थित हुए बिना, कंप्यूटर तथा अन्य इंटरनेट तकनीकी का प्रयोग करके संदर्भ स्टाफ के साथ संवाद करते हैं। डिजिटल संदर्भ में इस्तेमाल संचार माध्यमों में चैट, विडियो काफ्रेंसिंग, ई-मेल, वॉयस ओवर आईपी या त्वरित संदेश सम्मिलित है। इसे वर्चुअल संदर्भ सेवा, ऑनलाईन संदर्भ एवं परोक्ष अभिगम संदर्भ सेवा के रूप में भी जाना जाता है।

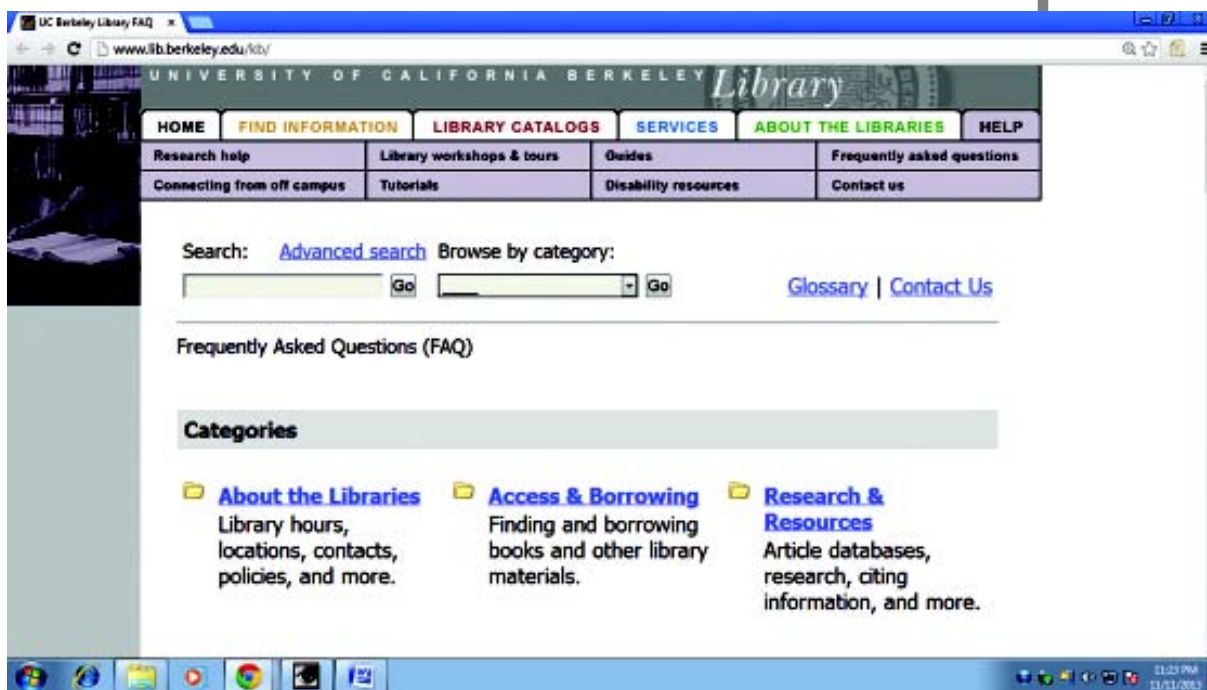
14.6.6 ई-मेल

यह इलैक्ट्रॉनिक मेल सुविधा है जो संदेशों को नेटवर्क या इंटरनेट के माध्यम से एक व्यक्ति के कंप्यूटर से दूसरे को सन्देशों को भेजने में सक्षम बनाती है। ग्रंथालय, ई-मेल के माध्यम से संदर्भ सेवाएं प्रदान करते हैं। संदर्भ कर्मचारियों/पुस्तकालयध्यक्ष के ई-मेल पते ग्रंथालय की वेबसाइट पर उपलब्ध रहते हैं। पाठक, ग्रंथालय संबंधित किसी अन्य पहलू या अपनी सूचना आवश्यकताओं में सहायता प्राप्त करने के लिए लिख सकते हैं। यह पाठकों के लिए सुविधाजनक है क्योंकि वे निजी तौर पर ग्रंथालय जाए बिना सहायता प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाईन वातावरण में पाठक स्वतंत्र रूप से अपने प्रश्न पूछ सकते हैं जो आमने-सामने के वातावरण के विपरीत है, जहां पाठक प्रश्न पूछने एवं सहायता प्राप्त करने में संकोच करते हैं।

14.6.7 अधिकांशतः पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

यह अधिकांशतः पूछे जाने वाले प्रश्नों से संबंधित है। यह सवाल और जवाब के रूप में जवाब देने के लिए अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक फाईल या सूची होती है। ये प्रश्न (FAQ) ग्रंथालय के विभिन्न पहलुओं, गतिविधियों तथा मुद्दों के बारे में पाठकों को सूचना देने में सहायता करते हैं। ग्रंथालय स्टाफ, अक्सर ग्रंथालय में प्राप्त होने वाले प्रश्नों की एक सूची तैयार करके उत्तर प्रदान करते हैं तथा इसे ग्रंथालय की वेबसाइट पर होस्ट करते हैं। पाठक, ग्रंथालय मामलों से संबंधित, अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए इन प्रश्नों (FAQ) का अभिगम

कर सकते हैं। कैलिफोर्निया बर्कले विश्वविद्यालय के ग्रंथालय की अधिकांश पूछे जाने वाले प्रश्नों (FAQ) की स्क्रीनशॉट <http://www.lib.berkeley.edu/kb/> नीचे दी गई हैं:



चित्र 14.2 : कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की बर्कले लाइब्रेरी के एफ ए क्यू की स्क्रीनशॉट

14.6.8 पाठक परामर्श सेवा

ग्रंथालय पाठकों को ऑनलाइन पुस्तक सूची अनुशंसाओं सहित तथा परामर्श सेवाएं प्रदान करता है। यह सेवा पाठकों को पुस्तक चयन के लिए इनकी आवश्यक सूचना के साथ प्रदान की जाती है। यह एक मूल्य वर्धित सेवा है जो पाठकों को सही पुस्तक से जोड़ती है (ग्रंथालय विज्ञान का तीसरा सूत्र)। यह सेवा सार्वजनिक ग्रंथालयों द्वारा कथा साहित्य की पुस्तकों को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप में प्रदान की जाती है। यह सेवा नए शोधकर्ताओं, जो एक विशेष क्षेत्र में अपना ज्ञान संवर्धन करना चाहते हैं उनकी सहायता करने के लिए शैक्षणिक ग्रंथालयों में भी प्रदान की जा सकती है। यह सेवा प्रदान करने के लिए संदर्भ स्टाफ को किसी भी क्षेत्र में विभिन्न शीर्षकों की उपलब्धता के बारे में पता होना चाहिए। उन्हें ग्रंथालय संग्रह के बारे में पूरी तरह परिचित होना चाहिए। संदर्भ कर्मचारियों को मैत्रीपूर्ण, विनम्र एवं बातचीत के तरीके से अपने सुझाव या मत व्यक्त करने में सक्षम होना चाहिए।

14.6.9 वेब 2.0 उपकरण

वेब 2.0 उपकरण, वेब-आधारित सुविधाएं हैं जो पाठकों को वेब-आधारित विषय वस्तु के विभिन्न प्रारूपों जैसे पाठ्य, दृश्य, श्रव्य, चित्र और रेखांकन के अभिगम, योगदान, वर्णित करने में अनुमति प्रदान करते हैं। कुछ लोकप्रिय वेब 2.0 आधारित वेबसाइट्स फ्लिकर है, जिसे फोटो



को साझा करने में, यू ट्यूब वीडियो को साझा करने, लास्ट एफएम, ऑडियो को साझा करने और माईस्पेस पाठ्य आधारित सूचना को साझा करने में प्रयोग किया जाता है। ये साइट पाठकों को विभिन्न प्रारूपों का ऑनलाइन विषय-वस्तु बनाने, विवरण, पोस्ट, खोज, सहयोग, साझा करने तथा संवाद स्थापित करने की अनुमति प्रदान करते हैं।

पाठकों को सूचना साक्षरता प्रदान करने के लिए ग्रंथालय वेब 2.0 उपकरण का प्रयोग करते हैं।

ग्रंथालय ग्राहकों को ग्रंथालय सेवाओं तथा संग्रहों में परिवर्तन, परिवर्धन एवं अन्य घटनाओं के बारे में सूचित करने के लिए ब्लॉग्स को प्रचार साधनों के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। वे पॉडकास्ट और वॉडकास्ट का उपयोग करके चित्र, घटनाओं तथा निर्देशों को पाठकों के साथ साझा कर सकते हैं। ग्रंथालय, पाठकों की सेवा और सम्भावित पाठकों को आकर्षित करने के लिए, सक्रिय रूप से इन उपकरणों को स्वीकार कर रहे हैं। ये उपकरण, ग्रंथालयों को अपने संसाधनों एवं सेवाओं को, अपने पाठकों को एक सक्रिय तरीके से प्रदान करने में सहायक होते हैं।

त्वरित संदेश (इंस्टेंट मैसेजिंग) और लघु पाठ्य संदेश सेवा (एसएमएस)

त्वरित संदेश, वास्तविक समय में वेब के माध्यम से पाठ्य आधारित लघु संदेश का उपयोग करके दो या दो से अधिक लोगों के बीच ऑनलाइन संचार की अनुमति देता है। संदर्भ स्टाफ आईएम और एसएमएस के माध्यम से तैयार संदर्भ प्रश्नों, निर्देशों या नीति संबंधी प्रश्नों का जवाब दे सकते हैं। संदर्भ स्टाफ को त्वरित संदेश (आईएम) और लघु पाठ्य संदेश (एसएमएस) के प्रश्नों का जवाब देते समय बहुत संक्षिप्त और सुसंगत होना चाहिए। स्टाफ पाठक को विषय संदर्भ में अधिक जानकारी देने के लिए या पाठक को ग्रंथालय में जाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए ई-मेल पता देने के लिए कह सकता है। पाठक अपनी सुविधा, अनामिता एवं तुरंत सहायता पाने के लिए आईएम और एसएमएस को उपयोगी समझते हैं। शैक्षणिक ग्रंथालय, वर्चुअल संदर्भ सेवा प्रदान करने, अन्य सेवाओं के अभिगम में सुधार एवं पाठकों को नवीनतम सूचना प्रदान करने में आईएम का उपयोग कर सकते हैं। पाठकों के साथ वार्तालाप की सुविधा के लिए यह एक अतिरिक्त माध्यम के रूप में कार्य करता है।

14.6.10 खोज-उपकरणों एवं वेबसाइट्स का निर्माण :

संदर्भ स्टाफ उपभोक्ताओं के लिए खोज-उपकरणों एवं मार्ग-खोजकर्ता का निर्माण करता है। ग्रंथालय, छात्रों द्वारा उठाए गए बहुत ही सामान्य प्रश्नों के बीच मार्ग खोजक तैयार करते हैं। मार्ग खोजक उचित संदर्भ स्रोत, उचित डाटाबेस, खोज शब्द, अधिकारिक मौजूदा वेबसाइट तथा और भी अन्य अतिरिक्त सामग्री के लिए ओपेक खोज के लिए सुझावों का चयन और पता लगाने में पाठकों की सहायता एवं मार्गदर्शन कर सकते हैं।

14.7 कंप्यूटरीकृत सेवाओं के लाभ

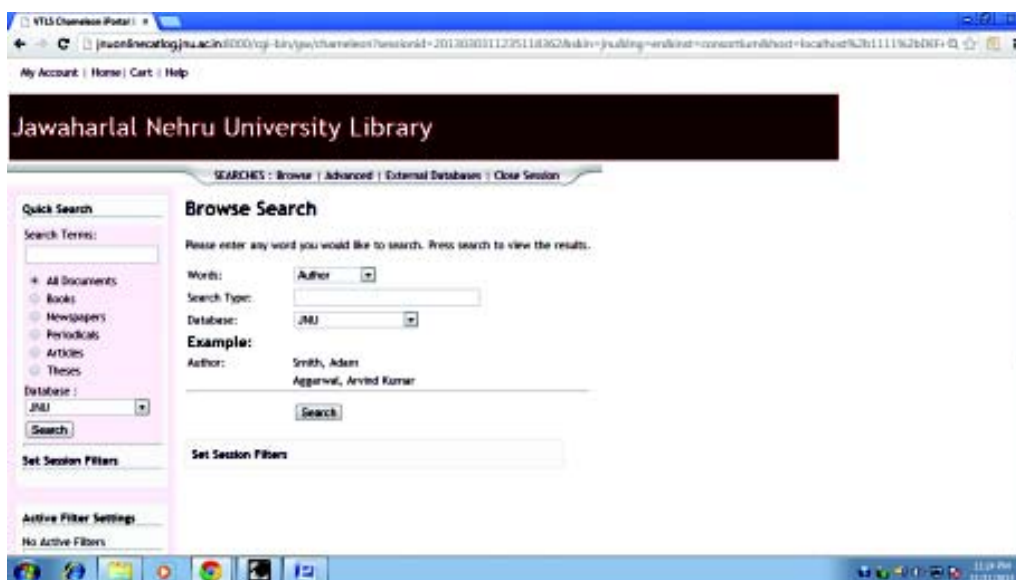
(क) गति

इलैक्ट्रॉनिक डाटाबेसों को उनके मुद्रित स्वरूप की तुलना में अधिक शीघ्रता से खोजा जा सकता है। ये डाटाबेस नवीनता के साथ पूर्णव्यापी खोज प्रदान करते हैं। कंप्यूटर टर्मिनल पर बैठा कोई भी व्यक्ति तेजी से, अद्यतन के साथ-साथ पूर्वव्यापी रिकार्ड को पुनः प्राप्त कर सकता है।

(ख) अधिक खोज विकल्प

ई-डाटाबेस द्वारा प्रदान किए गए खोज विकल्प उनके मुद्रित प्रतिरूप की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तृत होते हैं। मुद्रित स्रोतों में खोज अनुक्रमण (जैसे लेखक, विषय, कीवर्ड, इत्यादि) तक सीमित है। ई-डाटाबेस में कोई किसी भी क्षेत्र जैसे प्रकाशन वर्ष, पत्रिका शीर्षक, कीवर्ड, लेखक इत्यादि को खोज सकता है। इसके अतिरिक्त, ये डेटाबेस और अधिक खोज विकल्प जैसे कीवर्ड या वाक्यांश खोज (एक व्यक्ति, एक पद या एक से अधिक पदों के वाक्य खण्डों द्वारा खोज कर सकते हैं) बूलियन खोज (बूलियन ऑपरेटर का उपयोग जैसे और, या, नहीं) एवं ट्रंकेशन खोज (एक समान मूल वाले विभिन्न प्रारूपों को खोज सकता है)।

इसी प्रकार पत्रक प्रसूची की तुलना में ओपेक में अधिक खोज विकल्प प्रदान किए जाते हैं। इसके अलावा, ओपेक एक समय में एक से अधिक पाठकों द्वारा इस्तेमाल किया जा सकता है। पाठक, पुस्तक आरक्षित कर सकता है तथा ग्रंथालय में आए बिना परोक्ष रूप से नई पुस्तक के अर्जन का आग्रह भेज सकते हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालयी ग्रंथालय के ओपेक <http://jnuonlinecatlog.jnu.ac.in:8000/cgi-bin/gw/chameleon?sessionid=2013030311235118362&skin=jnu> & का स्क्रीनशॉट नीचे दिया गया है:



चित्र 14.3 : ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटालॉग का स्नैपशॉट



टिप्पणी



टिप्पणी

(ग) डाटा की सुगम उपलब्धता एवं अभिगम्यता

पाठक ग्रंथालय संसाधनों की खोज परोक्ष रूप में कर सकते हैं। ई-डाटाबेस की खोज एवं सूचना पुनः प्राप्ति में उसके मुद्रित प्रतिरूप की खोज की तुलना में कम समय लगता है। ई-डाटाबेस, डाटा की सुगम उपलब्धता एवं अभिगम्यता प्रदान करते हैं।

इसी तरह, कंप्यूटरीकरण, अभिलेखों के विकेंद्रीयकृत अभिगम को बढ़ावा देता है। पाठक वेब ओपेक के द्वारा ग्रंथालय में, पुस्तक की उपलब्धता या पुस्तक किसी पाठक को इश्यू है, की जांच कर सकता है। वे अपनी जरूरत के अनुसार, पुस्तक को आरक्षित भी करा सकते हैं। इसी तरह, मुख्य ग्रंथालय में ग्रंथालय स्टाफ का सदस्य, किसी ग्रंथालय में जाए बिना, पुस्तक या अन्य किसी भी अभिलेख की उपलब्धता की जांच कर सकता है।

(घ) डाटा का समेकन

अनेक ग्रंथालयों की विषय-वहृत सारणी सेवा, पूर्ण-पाठ्य, इलैक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं एवं पत्रिकाओं के लेखों के अवलोकन के साथ-साथ इन्हें मुद्रण के लिए भी आपस में जोड़ती है। ई-संसाधनों के पूर्ण पाठ्य के लिंक प्रदान करना, आधुनिक ग्रंथालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण मूल्यवर्धित सेवा है।



पाठगत प्रश्न 14.4

1. डिजिटल संदर्भ सेवा को परिभाषित करें?
2. वेब 2.0 उपकरण क्या हैं?
3. ओपेक (OPAC) के उपयोग बताइए?
4. कम्प्यूटरीकृत ग्रंथालय सेवाओं के उपयोगों को सूचीबद्ध करें?

14.8 इंटरनेट युग में ग्रंथालयाध्यक्षों की भूमिका

विशेषज्ञों में यह एक आम धारणा या आशंका है कि इंटरनेट युग में ग्रंथालयाध्यक्षों की भूमिका नगण्य हो जायेगी। यह आशंका पूरी तरह निराधार है। वास्तव में, इंटरनेट युग में उनकी भूमिका कम नहीं होगी, अगर वे स्वयं को शिक्षित और विकसित करें। ग्रंथालयाध्यक्ष को पाठक-केंद्रित सेवाएं प्रदान करने के लिए, नए उपकरणों एवं तकनीकों को जानना तथा उनका उपयोग करना होगा। ग्रंथालय की चार-दीवारी से परे कहीं भी, कभी भी कोई जरूरत हो तो पाठकों को सेवाएं प्रदान करने की उनसे अपेक्षा की जाती है। यदि पुस्तकाध्यक्ष अपने दिन-प्रतिदिन के काम में नए उपकरणों एवं तकनीकों को जानने एवं लागू करने को तैयार हों, तो इसे आसानी से क्रियात्त्वित किया जा सकता है।

आजकल चारों ओर सूचना के अतिरेक का वातावरण दिखाई देता है जिसका अर्थ है सूचना की अधिकता जिससे पाठक अभीभूत हैं इस संक्रांतिकाल में ग्रंथालयाध्यक्षों को अत्यंत महत्वपूर्ण



टिप्पणी

भूमिका निभानी है। यह अपेक्षित है कि वे पाठकों को बतायें कि इंटरनेट पर उपलब्ध सब कुछ विश्वनीय हो सकता भी है या नहीं भी हो सकता। उन्हें पाठकों को पढ़ाना होगा कि इंटरनेट को कैसे चलाया जाता है तथा प्राप्त की गई सूचना की गुणवत्ता का मूल्यांकन किस प्रकार किया जा सकता है। ग्रंथालयाध्यक्षों को अपने कौशल का प्रयोग आवश्यक ज्ञान के द्वार रक्षक के रूप में करना चाहिए, निरन्तर विस्तारशील ऑनलाइन दुनिया के माध्यम से पाठकों का मार्ग-निर्देशन करना चाहिए। विद्वतापूर्ण सूचना व्यापन के नवीन मॉडलों जैसे संस्थागत संग्रह, ई.टी.डी. इत्यादि के निर्माण, प्रोत्साहन एवं कार्य निष्पादन के द्वारा सक्रिय भूमिका निभाने की भी उनसे अपेक्षा की जाती है।

इंटरनेट के इस युग में, ग्रंथालयाध्यक्ष साइबर मार्गदर्शक होने के अतिरिक्त ज्ञान के अभिरक्षक भी हैं। उनसे अपेक्षा है:

- मूल्य-वर्धित सूचना व्यवसायिकों की तरह कार्य करें।
- डिजिटल सेवाओं को परम्परागत सेवाओं के साथ-साथ अपनाना तथा इसका समेकन करना।
- वार्तालाप का अच्छा कौशल रखना। ई-पत्रिकाओं का अंतिम निर्णय लेने, ऑनलाइन डाटाबेस के परोक्ष अभिगम के लिए और सहकारी संघों की भागीदारी के समझौतों के लिए किफायती अंशदान के लिए उन्हें, विक्रेताओं से वार्तालाप करना पड़ता है। उनको ई-पत्रिकाओं पैकेज सौदों से अच्छा मूल्य प्राप्त करने के लिए अधिकतम आय और न्यूनतम लागत का प्रयास करना चाहिए।
- डिजिटल परियोजनाओं के लिए अनुदान राशि की स्वीकृति के लिए अधिकारियों को मनाने का कौशल होना चाहिए।
- नवीनतम तकनीकी विकास के बारे में जानना चाहिए तथा पाठकों को कुशल सेवा प्रदान करने के लिए तकनीकी उपकरणों के उपयोग की पर्याप्त जानकारी का प्रावधान कराने में सक्षम होना चाहिए।
- ई-संसाधनों का ऑन-साइट और ऑफ-साइट दोनों परिस्थितियों में अभिगम सुनिश्चित कराना। उन्हें विभिन्न प्रिंट एवं ऑनलाइन संसाधनों के बारे में पता होना चाहिए और पैतृक संगठन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, संग्रह को उपयुक्त रूप से विकसित करने तथा उसका रखरखाव बनाए रखने का कौशल उनमें होना चाहिए।
- व्यक्तिगत और निजी सेवाएं प्रदान करने के लिए पाठकों के साथ करीबी कामकाजी संबंध स्थापित करना।
- सेवाएं प्रदान करने तथा पाठकों के साथ जुड़ने के लिए ब्लॉग, पॉडकास्ट, वॉडकास्ट जैसे वेब 2.0 उपकरणों का प्रयोग करना।
- दृष्टिहीन पाठकों के लिए, विषय वस्तु को वैकल्पिक प्रारूपों में व्यवस्थित, अधिग्रहीत, संगठित करना तथा रख-रखाव करना। उन्हें सुनिश्चित करना चाहिए कि ग्रंथालय एक भौतिक स्थान के रूप में शारीरिक विकलांग पाठकों के लिए भी अभिगम्य है।

मॉड्यूल-4

ग्रंथालय और सूचना सेवाएं



टिप्पणी

आधुनिक ग्रंथालय सेवाएं

- अन्य लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से काम करने के लिए पारस्परिक, कौशल होना चाहिए।
- अच्छा प्रबंधकीय एवं संचार कौशल होना चाहिए। उन्हें विश्लेषण, विवेकपूर्ण, निर्णय लेने तथा कब मार्गदर्शन करना है, इसको जानने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें पाठकों में अपनी सेवाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए। पाठकों के साथ संवाद करके उन्हें अपनी सेवाओं से उन्हें कैसे सन्तुष्ट किया जाए, इसका पता होना चाहिए।

इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि इंटरनेट युग में ग्रंथालयाध्यक्ष, चुनौतीपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी भूमिका स्थिर नहीं है, बल्कि लगातार समय और प्रौद्योगिकीय विकास की प्रगति के साथ विकसित हो रही है। प्रौद्योगिकी में कितनी उन्नति हुई इसकी चिंता किए बिना, ग्रंथालयाध्यक्षों को भविष्य में एक मुख्य भूमिका निभानी होगी। चूंकि ग्रंथालयाध्यक्षों द्वारा प्रदत्त मानवीय अन्तःक्रिया (ह्यूमन इन्टरफेस) के स्थान पर प्रौद्योगिकीय विकास कभी भी एक विकल्प नहीं हो सकते।



आपने क्या सीखा

- इंटरनेट के आगमन ने ग्रंथालय कार्यों के तरीकों को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। इससे पहले वे संग्रह के विकास पर केंद्रित होते थे और अब वे पाठकों के साथ अधिकधिक जुड़ने एवं उनके साथ संवाद से संबंधित हैं।
- इससे पहले, ग्रंथालयों को पुस्तकों एवं अन्य पठन सामग्रियों का भण्डार तथा ग्रंथालयाध्यक्षों को इनके अभिरक्षक के रूप में जाना जाता था जबकि अब ग्रंथालय, पाठकों को कहीं भी, कभी भी, जब वे चाहते हैं, अभिगम प्रदान कराने से संबंधित हैं।
- ग्रंथालयाध्यक्ष अब अभिरक्षक नहीं हैं, बल्कि अभिभावक और ज्ञान के पैरोकार हैं जो पाठकों के प्रति अपनी सेवाओं को बढ़ाने के लिए नए उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करते हैं।
- मैनुअल सेवाओं को कंप्यूटरीकृत सेवाओं में बदल दिया गया है जो प्रकृति में गतिपूर्ण, त्वरित और किफायती साबित हुई है।
- आधुनिक ग्रंथालय एक सामाजिक संगठन है जो अपनी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके सूचना सेवाएं प्रदान करता है। जरूरत पड़ने पर यह अपनी सेवाओं को 24 X 7 के आधार पर, अपनी विषम आबादी के लिए, प्रदान करती है। यह स्वयं को केवल स्थान-आधारित सेवाएं प्रदान करने तक ही सीमित नहीं रखती।
- इंटरनेट युग में ग्रंथालयाध्यक्षों की भूमिकाएँ कम नहीं होंगी। उन्हें स्वयं को शिक्षित और विकसित करते रहना होगा।



पाठान्त प्रश्न

1. एक आधुनिक ग्रंथालय की विशेषताओं की व्याख्या करें?
2. इंटरनेट युग में ग्रंथालयाध्यक्ष की भूमिका का वर्णन करें?
3. वेब 2.0 उपकरण क्या है? ग्रंथालय सेवाओं को बढ़ावा देने में उनको कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है?
4. आधुनिक ग्रंथालय सेवाओं की आवश्यकता पर चर्चा करें?
5. कंप्यूटरीकृत ग्रंथालय सेवाओं के क्या लाभ हैं?



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1

1. आधुनिक ग्रंथालय एक सामाजिक संगठन है जो प्रौद्योगिकरण का प्रयोग करके सूचना सेवाएं प्रदान करता है। जरूरत पड़ने पर 24 X 7 के आधार पर अपनी संपूर्ण विषम आबादी के लिए सेवाओं को प्रदान करती है। यह स्वयं को केवल “स्थान-आधारित सेवाएं” प्रदान करने तक ही सीमित नहीं रखती।

14.2

1. बिना कंप्यूटर को मध्यस्थता के पाठकों को प्रदान की जाने वाली अथवा वितरित की जाने वाली सेवाएं, मैनुअल सेवाओं के रूप में जानी जाती हैं। जबकि कंप्यूटरीकृत सेवाएं, कंप्यूटर को उपकरणों या मध्यस्थता के रूप में प्रयोग करके प्रदान की जाती हैं। कंप्यूटरीकृत सेवाएं ग्रंथालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर (एलएमएस) के द्वारा पाठकों को प्रदान की जाती हैं।

14.3

1. संसाधनों एवं सेवाओं को अधिग्रहीत व साझा करने के लिए ग्रंथालय एक संघ या नेटवर्क या सहकारी संगठन का निर्माण करते हैं। इन संघों या नेटवर्क को प्रायः कन्सोर्टिया के रूप में जाना जाता है। (कन्सोर्टियम : एकवचन)
2. परोक्ष अभिगम, परोक्ष दूरी से कंप्यूटर या नेटवर्क तक अभिगम प्राप्त करने की योग्यता है।

14.4

1. डिजिटल संदर्भ सेवा एक प्रकार की ई-संदर्भ सेवा होती है जहां पाठक निजी तौर पर उपस्थित हुए बिना कंप्यूटर तथा अन्य इंटरनेट तकनीकों का प्रयोग करके संदर्भ स्टाफ के साथ संवाद करते हैं। डिजिटल संदर्भ में इस्तेमाल संचार माध्यमों में चैट, वीडियो-कांफ्रेंसिंग,



टिप्पणी



ई-मेल, वॉइस ओवर, आईपी, त्वरित संदेश आदि होते हैं। इसे वर्चुअल संदर्भ सेवा, ऑनलाइन संदर्भ एवं परोक्ष अभिगम संदर्भ सेवा के रूप में भी जाना जाता है।

2. वेब 2.0 उपकरण वेब-आधारित सुविधाएं हैं जो पाठकों को वेब आधारित विषयवस्तु के विभिन्न प्रारूपों जैसे पाठ्य, दृश्य, श्रव्य, चित्र और रेखांकन के अभिगम, योगदान, विवरण प्रदान करने की अनुमति देते हैं।
3. पत्रक प्रसूची की तुलना में ओपेक में अधिक खोज विकल्प प्रदान किए जाते हैं। इसके अलावा, ओपेक का एक समय में एक से अधिक पाठकों द्वारा इस्तेमाल किया जा सकता है। पाठक, पुस्तक आरक्षित कर सकता है तथा ग्रंथालय में आए बिना, परोक्ष रूप से नई पुस्तक को क्रय करने का आग्रह भेज सकता है।
4. कंप्यूटरीकृत सेवाओं के लाभ
 - गति,
 - अधिक खोज विकल्प,
 - डाटा की सुगम उपलब्धता एवं अभिगम्यता, और
 - डाटा समेकन।

पारिभाषित शब्दावली

- **सहायक तकनीकी (Assistive technologies)** : यह एक ऐसा पद है जो विकलांग लोगों की मदद के लिए सहायक, अनुकूली पुनर्वासीय युक्तियों या उपकरणों उत्पादों को संदर्भित करता है। ये विकलांग व्यक्तियों के सुधार, वृद्धि एवं उनकी कार्य क्षमताओं को बनाए रखते हैं सहायक तकनीकी व्यक्तियों द्वारा उनके सम्प्रेषण, शिक्षा, कार्य और मनोरंजन में सहायक हैं। अधिकाधिक आत्म-निर्भरता और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायता प्रदान करती हैं।
- **सम-सामयिक जागरूकता सेवा (सीएएस) (Current awareness service (CAS))** : यह किसी विशेष विषय या मुद्दों में हुये नये विकास के संबंध में पाठकों को सचेत करने के लिए बनाई गई सेवा है; पत्रिकाओं की विषयवस्तु की सूचियों को वितरित करने की सेवा इसका एक उदाहरण है।
- **डाटाबेस (Database)** : यह विभिन्न डाटा मदों के विवरणों के साथ अभिलेखों का एक संग्रह है, जो सांख्यिक, शाब्दिक या छवि-आधारित हो सकता है। यह प्रायः खोजनीय होता है।
- **इलैक्ट्रॉनिक पत्रिका (Electronic journal)**: यह इलैक्ट्रॉनिक स्वरूप में उत्पादित एक पत्रिका होती है, कभी-कभी पेपर-आधारित पत्रिका इलैक्ट्रॉनिक समतुल्य होती है। उदाहरणार्थ Ariadne और सेल।



टिप्पणी

- **अधिकांशतः पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ) (Frequently Asked Questions (FAQs))** : यह एक विशेष विषय या मुद्दे के बारे में जवाब के साथ आमतौर पर पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक फाईल है। ये www साइट्स और इसके पृष्ठों की सूचना सहायता के स्रोत के रूप में सेवा करते हैं।
- **सूचना साक्षरता (Information literacy)** : इसे क्षमताओं के एक समूह के रूप में परिभाषित किया गया है जो व्यक्तियों को सूचना आवश्यकता की पहचान करने में सक्षम बनाती है और इसमें आवश्यक सूचना का पता लगाने, मूल्यांकन तथा प्रभावी रूप से उपयोग करने की क्षमता होती है। सरल शब्दों में, पाठकों को पत्रक प्रसूची या ओपेक का अभिगम कैसे करना है, मुद्रित संसाधनों और ऑनलाइन डाटाबेसों से सूचना की पुनः प्राप्ति का उपयोग करने के लिए शिक्षण देने का मतलब है सूचना साक्षरता।
- **इंटरनेट (Internet)** : इलैक्ट्रॉनिक संचार एवं सूचना के आदान-प्रदान में सक्षम बनाने के लिए मान्यताप्राप्त मानकों का प्रयोग करने के लिए एक साथ जुड़े हुए परस्पर नेटवर्क का एक विश्वव्यापी नेटवर्क है।
- **पॉडकास्ट (Podcast)** : यह आडियो, वीडियो, पीडीएफ या ई-पब फाइल को मिलाकर डिजिटल मीडिया फाइल की तरह है, जो एक कंप्यूटर या मोबाइल यंत्र पर एक स्ट्रीमिंग इंटरनेट से सीधे डाउनलोड किया जा सकता है।
- **रेडियो फ्रीक्वेंसी पहचान (आरएफआईडी) (Radio Frequency Identification (RFID))** : यह डाटा स्थानांतरण के लिए रेडियो-फ्रीक्वेंसी विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र वायरलैस गैर-सम्पर्क प्रयोग है, जो स्वतः वस्तुओं से जुड़े टैग की पहचान तथा ट्रैकिंग के प्रयोजनों के लिए है।
- **खोज सुविधा (Search facility)** : यह किसी भी उपकरण या सुविधा के लिए संदर्भित करता है, जिसे उस सूचना खोज के लिए प्रयोग किया जाता है जो इंटरनेट के माध्यम से अभिगम्य है; इसमें खोज इंजन, ग्रंथालय प्रसूची तथा ऑनलाइन डाटाबेस शामिल है।
- **केंद्रिक प्रसूची (Union catalogue)** : केंद्रिक प्रसूची एक संयुक्त ग्रंथालय सूची है जिसमें एक से अधिक ग्रंथालयों के संग्रह का वर्णन होता है।
- **वॉडकास्ट (Vodcast)** : डिजिटल रूप में संग्रहित वीडियो को इंटरनेट से कंप्यूटर तथा एमपी 3 प्लेयर पर डाउनलोड किया जा सकता है।

प्रस्तावित क्रियाकलाप

1. अपने आसपास के क्षेत्र में किसी भी ग्रंथालय में जाएं और उसके संग्रह और सेवाओं के बारे में लिखें।

मॉड्यूल-4

ग्रंथालय और सूचना सेवाएं



टिप्पणी

आधुनिक ग्रंथालय सेवाएं

2. अपनी पसंद के किसी भी ग्रंथालय की वेबसाइट पर जाएं और प्रयोग किए गए वेब 2.0 उपकरणों के बारे में लिखें। इसके द्वारा अंशदान किए गए ऑनलाईन संसाधनों के बारे में जानकारी प्राप्त करें।
3. अपने आसपास के क्षेत्र में किसी भी ग्रंथालय में जाएं। इसके द्वारा प्रदान की जाने वाली किन्हीं दो मैनुअल एवं कंप्यूटरीकृत सेवाओं के बारे में लिखें।
4. किसी भी ग्रंथालय की वेबसाइट पर जाएं तथा उसके ओपेक का स्क्रीनशॉट लें।